किधर जा रहे हैं नीतीश ?

-मनोज कुमार झा

पिछले दिनों बिहार के मुख्यमंत्री और जनतादल (यूनाइटेड)के प्रमुख नेता नीतीश कुमार ने दिल्ली के रामलीला मैंदान में रैली कर सोनिया-मनमोहन सरकार को अपनी ताकत का एहसास करना चाहा। खास बात यह है कि इस रैली के लिये स्वयं सोनिया ने उन्हें बधाई दी। यह 'द ग्रेड इंडियन पॉलिटिकल थिएटर' में लगातार चल रहे प्रहसनों की एक कड़ी ही थी।

नीतीश कुमार ने योजना उपाध्यक्ष आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक के जर ख़रीद गुलाम मोंटेकसिंह अहलुवालिया से भी मुलाकात की। नीतिश कुमार लंबे अर्से से यह मांग कर रहे है कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया जाए ताकि उसे केंद्र से खूब अनुदान मिल सके और वे अत्यंत पिछड़े बिहार का विकास कर सकें। वैसे, कुछ लोगों का मानना है कि बिहार के आर्थिक विकास की दर गुजरात से भी ज्यादा है और इस 'उपलब्धि' को देखते हुए मोदी की जगह नीतीश को प्रधानमंत्री बनने के लिये दावा ठोकना चाहिए।

बहरहाल, यह रैली कर नीतीश ने यह साफ संकेत दिया कि वे मोदी के आधिपत्य

वाले भाजपा के गठजोड़ नहीं रह पाएंगे। उन्होंने साफ कहा कि वे केंद्र में उसी सरकार का समर्थन करेंगे जो बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देगी। अब यह अलग बात है कि कोई भी केंद्र सरकार बिहार को कैसे विशेष राज्य का दर्जा दे सकती है, क्योंकि जिस आधार पर उसे विशेष दर्जा दिया जा सकता है तो कई राज्य यह दर्जा पाने के हकदार हो जाएंगे।

स्पष्ट है, नीतीश नये राजनीतिक समीकरणों की तलाश में लग गए हैं। समय बहुत कम है। 2014 सामने है। भाजपा के साथ उनके रिश्ते टूटने के कगार पर हैं, क्योंकि मुस्लिम वोटों के लिये उन्हें अपनी 'सेकुलर' छवि बनाये रखनी है। भाजपा के सामने कोई चारा नहीं है। मोदी प्रधानमंत्री पद के दावेदार घोषित किए जाएंगे। मोदी और नीतीश, दोनों तलवार हैं, भला एक म्यान में कैसे रहेंगे।

लगता है, नीतीश ने भाजपा गठबंधन से अलग होने का फैसला कर लिया है। औपचारिक घोषणा भर बाकी है। भाजपा ने कहा है कि वह बिहार में सभी संसदीय सीटों से चुनाव लड़ेगी। और अभी नीतीश सरकार में उसकी स्थिति दोयम दर्जे वाली है। बिहार में चुनावी समीकरण अभी नीतीश के पक्ष में है। लालू-पासवान के पांवों तले ज़मीन रही नहीं। कांग्रेस को मांगे पानी भी नहीं मिलने वाला। भाजपा आत्मघात की राह पर चल पड़ी है। नीतीश इस बात को समझ चुके हैं। लेकिन जिस तरफ वे बढ़ रहे हैं, कहां जाएंगे, कह पाना मुश्किल है।

घोटाला करने में कीर्तिमान स्थापित कर चुकी सोनिया-मनमोहन सरकार के ख़िलाफ़ पूरे देश में असंतोष और आक्रोश चरम पर है। कई बार गिरते-गिरते, तिकड़मों और सांसदों की खरीद-फ़रोक्त के दम पर यह सरकार बच गई और अब क्या गिरेगी। पर तय है, 2014 में कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार बननेवाली नहीं। न भाजपा के नेतृत्व में। राजनीतिक विश्लेषकों का ऐसा ही मानना है।

फिर नीतीश कांग्रेस के प्रति विशेष लगाव क्यों दिखा रहे हैं? क्या ऐसा वे हताशा में कर रहे हैं। किसी बड़े राष्ट्रीय कहे जाने वाले दल से जुड़े बिना जद (यू) केंद्र सरकार में भागीदार नहीं हो सकता। वामपंथी फिर से उठ खड़ा हो पाने में अपने-आपको असमर्थ पा रहे हैं। यूपी में अखिलेश ने मुलायम की मिट्टी और भी पलीद कर दी है। ममता राग का सुर-ताल किसी से मिलता नहीं दिखाई पड़ता। द्रमुक ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया। अब जयललिता कौन-सा दाव चलती हैं, यह देखने वाली बात है। चंद्रबाबू नायडू, ओमप्रकाश चौटाला जैसे क्षत्रपों की हालत भी पतली है। ऐसे में, तीसरा मोर्चा बन पाने की संभाना नज़र नहीं आती।

शायद, नीतीश इसीलिए दिग्भ्रमित हो गए हैं। जाएं तो जाएं कहां? किसके साथ हो लें? क्या उन्हें कांग्रेस में कई संभावना दिखाई पड़ रही है? तय है, अगर उन्होंने सोनिया का पल्लू थामा तो बिहार में भी अपनी ज़मीन खो बैठेंगे। नीतीश ऊपर से तो बहुत ही साफ-सुथरी छावि के नेता दिखते हैं, पर वास्तव में ऐसा है नहीं। लालू के कुशासन और अत्याचारों से तंग आ चुकी बिहार की जनता उन्हें गद्दी सौंपी थी, लेकिन जनता को आखिरकार उनसे निराशा ही मिली। पर जनता के सामने विकल्प ही क्या है? विकल्पहीनता भारतीय राजनीति का प्रमुख संकट है। नीतीश पर व्यक्ति गत रूप से भले ही भ्रष्टाचार का कोई आरोप न हो, लेकिन उनके मंत्रिमंडल में दागी लोगों की कमी नहीं है और न ही गुंडे-बदमाशों की। लालू के कई बदनाम साथी अब उनके साथ हैं। बाढ़ शहर का एक बड़ा माफिया उनका दाहिना हाथ है। तस्लीमुद्दीन जैसा बड़ा माफ़िया-बलात्कारी जो पहले लालू के साथ था, अब उनके साथ हैं। लालू का साथी शहाबुद्दीन तो जेल में है, पर तस्लीमुद्दीन खुला घूम रहा है राजकीय संरक्षण में। नीतीश के बारे में कहा जाता है कि अपने गृह-नगर बख्तियारपुर से चुनाव नहीं जीत सकते। और जहां से चुनाव जीत रहे हैं, अगर गुंडे-बदमाशों का सहयोग न मिले तो वहां से भी नहीं जीत सकते। अगर लालू ने जातिवादी और अल्पसंख्यक संप्रदायवाद के सहारे डेढ़ दशक तक बिहार पर राज किया तो नीतीश भी तो वही काम कर रहे हैं। उन्होंने आखिर बिहार की जनता को दिया क्या?

कुछ समय पहले भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ़ अभियान शुरू किया था, उनकी कोठियां जब्त कर वहां स्कूल चलवाने लगे। फिर दबाव बढ़ा तो यह अभियान भी ठंडा पड़ गया। नीतीश ने बिहार में शराब के खूब ठेंकें खुलवाये। उनके राज में दलित लड़कियों के साथ रेप की घटनाएं काफी बढ़ी हैं। नीतीश के राज में बिहार में न कोई नये उद्योग लगे, नही पूंजीनिवेश हुआ। बेरोजगार युवा हताश हैं। ठेके पर काम करने वाले शिक्षकों की हालत बुरी है। खेती-किसानी का बुरा हाल है। उजड़े हुए किसानों के बेटे महानगरों में मज़दूरी करने के लिये पलायन कर रहे हैं। राहत किसी को नहीं। ग्राम-पंचायतें दबंगों के हवाले है और प्रशासन की तो पूछिए मत। फिर नीतीश ने किया क्या? कंबल ओढ़ कर घी पी रहे हैं। बगुला-भगत हैं नीतीश।

दरअसल, बिहार को शुरू से ही लूटा जा रहा है। अंग्रेजों ने लूट की हद ही कर दी थी। आजादी के बाद भी लूट का सिलसिला कभी रुका नहीं। कांग्रेसियों ने जमकर लूट मचाई। जनता पार्टी का राज आया तो कर्पूरी ठाकुर जैसा एक ईमानदार और ज़मीन से जुड़ा आदमी मुख्यमंत्री बना, पर सिस्टम का क्या करता। इसके बाद संजय गांधी का जूता साफ करने वाले जगन्नाथ मिश्र ने तो लूट की अति ही कर दी। इनसे भी बड़े लुटेरे निकले लालू।

नीतीश कम से कम डायरेक्ट तो नहीं लूट रहे। पर लूटतंत्र तो कायम है। इस लूटतंत्र को कौन तोड़ेगा? वामपंथी आंदोलन मर गया। माओवादी गुमराह और दिशाहीन हैं। देश में राजनीतिक समीकरण स्पष्ट न होने की वजह से सभी दलों के नेताओं में खलबली मची है। क्या होगा उनका? यह सवाल नीतीश को भी परेशान कर रहा है। इसी परेशानी में वे कांग्रेस की ताफ बढ़ते दिखाई पड़ रहे हैं। कांग्रेस के प्रति उनका झुकाव तभी दिखाई पड़ा था, जब उन्होंने बजट की प्रशंसा की थी। अभी रैली के बाद जद (यू) अध्यक्ष शरद यादव ने भी कांग्रेस के बड़े नेताओं से मुलाकात की है। निहितार्थ स्पष्ट हैं। लेकिन यह भी सच है कि नीतीश ने अगर कांग्रेस से हाथ मिलाया तो आत्मघात की राह पर चल पड़ेंगे।

विशेष दर्जे की नहीं, लूट रोकने के लिए डंडे की जरूरत

समझने वाली बात ये हैं कि विशेष दर्जा है कि क्या और क्यों मांगा जा रहा है। इसके तहत नीतीश सरकार को राज्य का पिछड़ापन दूर करने के नाम पर केंद्र से हजारों-लाखों करोड़ रूपये मिलने का रास्ता खुल जाएगा। गौरतलब है कि बिहार का पिछड़ापन धन या संसाधनों के अभाव के चलते नहीं है। इसके पास किसी भी राज्य से कम संसाधन नहीं हैं और झारखंड के रहते तो इसका कोई सानी ही नहीं था। फिर भी पिछड़ा क्यों रहा राज्य? यह एक गंभीर प्रश्न है। उत्तर स्पष्ट है-नेताओं द्वारा की जाने वाली खुली लूट। जब तक इस लूट को बंद नहीं किया जाएगा और लूटा हुआ माल लुटेरों के हलक से नहीं निकाला जाएगा, तब तक इस राज्य का कुछ होने वाला नहीं है। विशेष राज्य के दर्जे के तौर पर यहां धन की आवश्यकता नहीं, बल्कि लूट थामने के लिये सख्त डंडे की जरूरत है।

तुर्की-ब-तुर्की

परवेज़ मुशर्रफ़

मैं देश की सेवा के लिये लौटा हूं। (साढ़े चार साल बाद पाकिस्तान वापसी पर सैनिक तानाशाह एवं पूर्व राष्ट्रपति की टिप्पणी)

हमारा कहना है

- सत्तालोलुपों को चुनाव से ठीक पहले देश का ध्यान आना स्वाभाविक है। क्योंकि चुनाव में गद्दी हथिया कर ही उनका देश-सेवा का मकसद पूरा हो सकता है। यह मकसद है जनता और देश को लूट कर अपनी और अपने जैसों की जेबें भरना।
- मुशर्रफ़ साहब ज़रा ये भी बता दीजिये कि जितने साल आप सत्तारूढ़ रहे आपने पाकिस्तान के अवाम की क्या खिदमत की?
- जो साढ़े चार साल आपने विदेशों में बिताये हैं उनका ख़र्चा-पानी कहां से आया? अब भी जब आप वतन वापस लौटे हैं तो चार्टर्ड प्लेन से। लगता है इन ऐय्याशियों के लिये आपके पास पैसे कम पड़ते जा रहे हैं। लिहाज़ा एक बार और सत्तानशीन होना जरुरी है।

मुलायम सिंह यादव

कांग्रेस धोखेबाज़ है। वह सी बी आइ और इनकम टैक्स विभाग का ग़लत इस्तेमाल कर अपने विरोधियों को ब्लैकमेल करती है।

हमारा कहना है

- गनीमत है मुलायम जी कि कांग्रेस सी बी आइ और इनकम टैक्स विभाग का ग़लत इस्तेमाल करती है। अगर कहीं इन विभागों का सही इस्तेमाल किया जाये तो आप जैसे भ्रष्ट नेता तो कभी जेल से बाहर आयेंगे ही नहीं। साथ ही आपकी सारी काली कमाई का क्या होगा, ज़रा यह तो सोचिये।
- ग़लत इस्तेमाल भी आपको तभी नज़र आता है जब आप स्वयं निशाने पर होते हैं। अन्यथा आपकी अपनी पुलिस यू पी में गुंडे-बदमाशों के पक्ष में क्या-क्या कर रही है, यह किसी से छिपा नहीं।

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

जैसी करनी वैसी भरनी। (पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला और उनके साहबज़ादे अजय चौटाला के शिक्षक भर्ती स्कैम में सज़ा होने पर)

हमारा कहना है

- कहीं यह सिद्धांत आप पर भी लागू हो गया तो? क्योंकि सरकारी नौकरियां तो आज भी पैसे और सिफ़ारिश के दम पर ही मिल रही हैं। उसी तरह लिस्टें बनती हैं और उसी तरह हाथ पकड़ कर दस्तखत कराये जाते हैं।
- सत्ता में रहते हुए आप जो चाहे बोल सकते हैं जैसे चौटाला साहब बोलते थे। सत्ता से हटने के बाद आपके कर्म बोलेंगे जैसे चौटाला के बोल रहे हैं।